आरती – शनिमहाराजजी की

ओम जय जय शनि महाराज, स्वामी जय जय शनि महाराज ।
कृपा करो हम दीन रंक पर, दुःख हरियो प्रभु आज ।।

सूरज के तुम बालक होकर, जग में बड़े बलवान ।
सब देवताओं में तुम्हारा, प्रथम मान है आज ।।ओम ।।

विक्रमराज को हुआ घमण्ड फिर, अपने का स्वामी ।
चकनाचूर किया बुद्धि को, हिला दिया सरताज ।।ओम ।।

प्रभु राम और पांडवजी को, भेज दिया बनवास ।
कृपा होय जब तुम्हारी स्वामी, बचाई उनकी लाज ।।ओम ।।

शुर–संत राजा हरिशचन्द्र का, बेच दिया परिवार ।
पात्र हुए जब सत परीक्षा में, देकर धन और राज ।।ओम ।।

गुरुनाथ को शिक्षा फाँसी की, मन के गरबन को स्वामी ।
होश में लाया सवा कलाक में, फेरत निगाह राज ।।ओम ।।

माखन चोर वो कृष्ण कन्हाई, गैयन के रखवार ।
कलंक माथे का धोया उनका, खड़े रूप विराज ।।ओम ।।

देखी लीला प्रभु आया चक्कर, तन को अब न सतरवे ।
माया बंधन से कर दो हमें, भव सागर ज्ञानी राज ।।ओम ।।

मैं हूँ दीन अनाथ अज्ञानी, भूल भई हमसे स्वामी ।
क्षमा शांति दो नारायण को, प्रणाम लो महाराज ।।ओम ।।

ओम जय जय शनि महाराज, स्वामी जय जय शनि महाराज ।
कृपा करो हम दीन रंक पर, दुःख हरियो प्रभु आज ।।

जीते जी रक्तदान मरणोपरान्त नेत्रदान